वैदिक देवी-पूजा (पद्धति)

वैदिक

देवी-पूजा-पद्धति

लेखक

परम पूज्य 'राष्ट्र-गुरु' श्री १००८ स्वामीजी महाराज

श्री पीताम्बरा पीठ, दतिया (म० प्र०)

प्रकाशक

पं॰ देवीदत्त शुक्ल स्मारक

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

प्रयाग—६

कल्याण मन्दिर प्रकाशन

मूल्य १०/-

प्रकाशक
कल्याण मन्दिर प्रकाशन
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज २११००६ (उ० प्र०)
दूरभाष : ६०६७८३

प्रथम संस्करण

बसन्त-पञ्चमी 'व्यय' सम्वत् २०५० वि०–१५ फरवरी, ९४

मूल्य [redacted]

मुद्रक
परावाणी प्रेस
अलोपी देवी मार्ग
प्रयाग-राज २११००६ (उ० प्र०)

अनुक्रमणिका

दो शब्द	...	५
१. स्वस्ति-वाचन (पूजा का प्रारम्भ)	...	७
२. पूजन करने की आज्ञा की प्राप्ति	...	८
३. सङ्कल्प	...	८
४. भगवान् गणेश की पूजा	...	९
५. शङ्ख और घण्टा का पूजन	...	१०
६. दीप की पूजा	...	१०
७. आसन की पूजा	...	१०
८. भूत-शुद्धि	...	११
९. कवच-पाठ	...	१५
१०. मातृका-न्यास	...	१५
१–अन्तर्मातृका-न्यास ... १५		
२–बहिर्मातृका-न्यास ... १७		
११. मूल-मन्त्र का न्यासादि	...	२१

१२. पोठ-पूजन-क्रम ... २१
१–अर्घ्य-पात्र का स्थापन ... २१
२–पीठ-पूजा ... २२
१३. आवाहन और पूजन ... २३
१–आवाहन ... २३
२–पूजन ... २४
१४. आवरण-पूजन ... ३४
१५. बलि-प्रदान ... ३६
१६. आरती ... ३७
१७. पुष्पाञ्जलि ... ३७
१८. प्रदक्षिणा ... ३८
१९. क्षमपण-स्तोत्र-पाठ ... ३८
२०. प्रसाद-वितरण ... ३९
२१. संक्षिप्त नित्य-होम ... ४०

• • •

देवी की मूर्ति-पूजा

क्रीडार्थक 'दिव्' - धातु से 'देवी' - शब्द बना है। जो 'चित्-शक्ति' स्वतः क्रीड़ा करती है, उसे 'देवी' कहते हैं। क्रीड़ा के साथ-साथ मनुष्यों को तत्त्व - ज्ञान देनेवाली अनेक विद्याओं को 'देवी' उत्पन्न करती हैं। इसी से 'देवी' को 'मुक्ति-दायिनी' मानते हैं। इस प्रकार 'भोग' (क्रीड़ा) और 'मोक्ष' (तत्त्व-ज्ञान)—दोनों को देनेवाली 'देवी' मानव-मात्र के लिए परम शोधनीया है।

उक्त परम 'तत्त्व' की खोज एवं उसके साक्षात्कार के लिए विविध उपायों का अन्वेषण भारतीय ऋषियों द्वारा किया गया। तभी परम 'तत्त्व' के ज्ञान के लिए 'भारत'-भूमि आज भी गुरु-वत् मानी जाती है। धार्मिक शिक्षा के अभाव के कारण एवं विदेशी विचारों के प्रभुत्व को स्वीकार कर लेने के कारण अधिकांश आधुनिक शिक्षित भारतीयों को इस तथ्य का स्मरण नहीं रह गया है। 'स्व-स्मृति-बोध' से हीन होकर ये तथा-कथित शिक्षित लोग 'भारत'-वासी होते हुए भी उक्त परम 'तत्त्व-ज्ञान' को न तो समझ पाते हैं, न ही उससे कोई लाभ उठा पाते हैं। इसके विपरीत वे समय-असमय श्रेष्ठ 'तत्त्व - विज्ञान' की निरा-धार आलोचना किया करते हैं।

उदाहरण के लिए 'भारत' के आज के 'आधुनिक' समाज को देखा जा सकता है। इस समाज को वर्षों पूर्व हिन्दुत्व के नव-जागरण काल में परम पूज्य स्वामी विवेकानन्द जी ने बड़ी प्रभावी शैली में चेताया था। उन्होंने कहा था—

'आजकल मूर्ति - पूजा को खराब बताने की प्रथा - सी चल पड़ी है और सभी लोग उस प्रथा में विश्वास भी करने लग गए

हैं। यदि 'मूर्ति-पूजा' के द्वारा श्री रामकृष्ण जैसे व्यक्ति उत्पन्न हो सकते हैं, तो हजारों मूर्तियों की पूजा करो···।'

भारत भर में लोक-प्रिय 'श्री चण्डी' (श्रीदुर्गा-सप्तशती) में स्पष्ट उल्लेख है कि राजा सुरथ एवं समाधि वैश्य ने मिट्टी की प्रतिमाएँ बनाकर 'देवी' की पूजा की थी क्योंकि भारतीय 'तत्त्व-विज्ञान' में 'परम तत्त्व' की प्राप्ति के लिए प्रतीकों का सहारा लेना आवश्यक बताया गया है। प्रतीकों के औचित्य को 'अरुन्धती-न्याय' से स्पष्ट किया गया है। इस 'न्याय' के अनुसार 'अरुन्धती'-नामक अति सूक्ष्म 'नक्षत्र' को देखने के लिए पहले उसके निकट स्थित एक बड़े 'नक्षत्र' पर दृष्टि स्थिर करनी पड़ती है। बड़े 'नक्षत्र' पर दृष्टि के स्थिर हो जाने पर उससे छोटे 'नक्षत्र' पर ध्यान जमाना पड़ता है। फिर उसके आगे के और भी सूक्ष्म 'नक्षत्र' को देखने का प्रयत्न करना होता है। इस प्रकार क्रमशः अभ्यास करने पर अत्यन्त सूक्ष्म नक्षत्र 'अरुन्धती' भी दृष्टि-गत होने लगता है।

उक्त 'अरुन्धती-न्याय' के अनुसार सूक्ष्मातिसूक्ष्म 'देवी-तत्त्व' (ब्रह्म-तत्त्व) को हृदयङ्गम करने के लिए हमें स्थूल प्रतीकों का आश्रय लेकर आगे बढ़ना होगा। अतः स्पष्ट है कि 'देवी' की कृपा-प्राप्ति के लिए उनकी 'मूर्ति', 'चित्र' या 'यन्त्र' की 'पूजा' अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण है।

प्रस्तुत पुस्तक में 'देवी'-पूजा की वैदिक-पद्धति दी गई है पुस्तक में जहाँ - जहाँ 'अमुकी-देवी' लिखा है, वहाँ-वहाँ अपनी इष्ट-देवी का नाम लेकर पूजन करना चाहिए।

चैत्र, नवरात्र, २०५१ वि० —प्रकाशक

वैदिक

देवी-पूजा-पद्धति

'स्नान' और 'सन्ध्योपासना' के बाद पूजन आरम्भ करे। पहले अरिष्टों की शान्ति-हेतु स्वस्ति-वाचन करे—

१. स्वस्ति-वाचन (पूजा का प्रारम्भ)

हरि: ॐ गणानां त्वा गणपति ँ हवामहे।
प्रियाणां त्वा प्रिय-पति ँ हवामहे निधीनाम् ।।
त्वा निधि-पति ँ हवामहे वसो मम।
आहमजानि गर्भ - धमा त्वमजासि गर्भधम् ।।१

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्ध - श्रवा: स्वस्ति न: पूषा विश्व-वेदा: ।
स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्ट-नेमि: स्वस्ति नो वृहस्पतिर्दधातु ।।२

पय: पृथिव्यां पय ओषधीषु पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधा: ।
पयस्वती: प्रदिश: सन्तु मह्यम् ।।३

विष्णोरराटमसि विष्णो: श्नप्त्रे स्थो विष्णो: स्यूरसि ।
विष्णो ध्रुवोऽसि वैष्णवमसि विष्णवे त्वा ।।४

अग्निर्देवता, वातो देवता, सूर्यो देवता, चन्द्रमा देवता, वसवो देवता, रुद्रा देवताऽऽदित्या देवता, मरुतो देवता, विश्वेदेवा देवता, वृहस्पतिर्देवतेन्द्रो देवता, वरुणो देवता ।।५

द्यौ: शान्तिरन्तरिक्ष ँ शान्ति:, पृथिवी शान्तिराप: शान्ति-रोषधय: शान्ति:। वनस्पतय: शान्तिर्विश्वेदेवा: शान्तिर्ब्रह्म शान्ति:, सर्व ँ शान्ति: शान्तिरेव शान्ति:, सा मा शान्तिरेधि ।।६

विश्वानि देव-सवितर्दुरितानि परासुव यद्-भद्रं तन्न आसुव ।।७

एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञ भव, तेन यज्ञ-पतिं, तेन मामव ।।८

मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य वृहस्पतिर्यज्ञमिमं तनोत्वरिष्टं यज्ञ ँ समिमं दधातु । विश्वेदेवा स इह मादयन्तामो ँ प्रतिष्ठ ।।९

एष वै प्रतिष्ठा नाम - यज्ञो यत्रैतेन यज्ञेन यजन्ते सर्वमेव प्रतिष्ठितं भवति ।।१०

ॐ शान्तिः सु - शान्तिः सर्वारिष्ट - शान्तिर्भवतु ।

वक्र - तुण्ड, महा - काय, सूर्य-कोटि-सम-प्रभ !
निर्विघ्नं कुरु मे देव ! सर्व - कार्येषु सर्वदा ।।

ॐ सिद्धि-बुद्धि-सहिताय श्रीमन्महा-गणाधिपतये नमः । वामे गुं गुरुभ्यो नमः । दक्षिणे भैं भद्र-काल्यै नमः । उपरि गं गण-पतये नमः । हृदि 'अमुकी'-देव्यै नमः ।

२. पूजन करने की आज्ञा की प्राप्ति

'स्वस्त्ययन' करने के बाद हाथ जोड़कर श्रीभैरव से पूजन करने की आज्ञा माँगे । यथा—

ॐ तीक्ष्ण-दंष्ट्र, महा-काय, कल्पान्त-दहनोपम !
भैरवाय नम स्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ।।

हाथ में लिए हुए अक्षत - पुष्प भगवान् भैरव के प्रति चढ़ा दे । अब हाथ में जल-अक्षतादि लेकर 'सङ्कल्प' पढ़े ।

३. सङ्कल्प

ॐ स्वस्ति श्रीपर-ब्रह्मणः सच्चिदानन्दस्याज्ञया प्रवर्तमानस्य अद्य ब्रह्मणो द्वितीय-प्रहरार्द्धे, एक-पञ्चाशत्-तमे वर्षे, प्रथम-पक्षे,

प्रथम - दिवसे, अह्नो द्वितीये यामे, तृतीये मुहूर्ते, रथान्तरादि-द्वा-विंशत्-कल्पानां मध्ये, अष्टमे श्रीश्वेत-वाराह-कल्पे, स्वायम्भुवादि-मन्वन्तराणां मध्ये, सप्तमे बैवस्वत - मन्वन्तरे, कृत-त्रेता-द्वापर-कलि-संज्ञानां चतुर्युगानां मध्ये, वर्तमाने अष्टा-विंशति-तमे कलि-युगे, तत् - प्रथमे चरणे तथा पञ्चाशत्-कोटि-योजन-विस्तीर्ण-भू-मण्डलान्तर्गत-सप्त-द्वीप-मध्य-वर्तिनि जम्बू - द्वीपे, तत्रापि नव-खण्डानां मध्ये नव-सहस्र - योजन - विस्तीर्णे भरत-खण्डे तत्रापि, परम-पवित्रे भारत-वर्षे, आर्यावर्तान्तर्गत 'अमुक'-प्रदेशे, श्रीगङ्गा-यमुनयोः 'अमुक'-तटे, श्रीनर्मदाया उत्तरे देशे, श्रीमन्नृपति-विक्र-मादित्य-राज्यातीत 'अमुक'-वर्ष परिमिते, प्रवर्तमान - सम्वत्सरे, प्रभवादि - षष्टि - सम्वत्सराणां मध्ये 'अमुक' - नाम्नि सम्वत्सरे, 'अमुकायने', 'अमुक'-गोत्रे, 'अमुकर्तौ', 'अमुक'-मासे, 'अमुक'-पक्षे, 'अमुक'-तिथौ, 'अमुक' - वासरे, 'अमुक' - योगे, 'अमुक' - करणे, 'अमुक' - राशिस्थे सूर्ये, 'अमुक' - राशिस्थे चन्द्रमसि, 'अमुक'-राशिस्थे देव - गुरौ, शेषेषु यथा-यथा राशि-स्थान-स्थितेषु सत्सु एवं ग्रह-गण-विशेषण-विशिष्टायां शुभ -पुण्य - तिथौ 'श्रीअमुकी'-देव्याः प्रीत्यर्थं यथा - सम्पादित - सामग्रचा पूजनं करिष्यामहे (करिष्ये वा)।

'सङ्कल्प' पढ़कर अक्षतादि को पृथिवी पर छोड़ दे।

४. भगवान् गणेश की पूजा

गणेश-पूजन नीचे लिखे मन्त्र से करे—

ॐ नमो गणेभ्यो गण - पतिभ्यश्च वो नमो नमो, व्रातेभ्यो व्रात-पतिभ्यश्च वो नमो नमो, गृत्सेभ्यो गृत्स - पतिभ्यश्च वो नमो नमो, विरूपेभ्यो विश्व-रूपेभ्यश्च वो नमः। ॐ भूर्भुवः स्वः वक्रादि-

द्वादश-गणपा इहागच्छत, इह तिष्ठत, वक्रादि-द्वादश-मूर्ति-गणपान् आवाहयामि पूजयामि—'ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर-वरद सर्व-जनं मे वशमानय स्वाहा।'

५. शङ्ख और घण्टा का पूजन

देवताओं के आगमन और राक्षसों के भगाने के लिए घण्टा बजाकर उसकी पूजा इस मन्त्र से करे—

त्वं पुनः सागरोत्पन्नो, विष्णुना विधृतः करे।
निर्मितः सर्व-देवैश्च, पाञ्चजन्य ! नमोऽस्तु ते॥

६. दीप की पूजा

अपने सामने दाहिनी ओर घृत का दीपक जलाकर रखे और यह पढ़कर उसको नमस्कार करे—

ॐ भक्त्या दीपं प्रयच्छामि, देवाय परमात्मने।
त्राहि मां निरयाद् घोराद्, दीप-ज्योतिर्नमोऽस्तु ते॥

७. आसन की पूजा

पहले 'आसन'-शुद्धि का विनियोग पढ़े—

ॐ पृथ्वीति मन्त्रस्य श्रीमेरु-पृष्ठ-ऋषिः, सुतलं छन्दः, श्रीकूर्मः देवता, आसनोपवेशने विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीमेरु-पृष्ठ-ऋषये नमः शिरसि। सुतलं-छन्दसे नमः मुखे। श्रीकूर्म-देवतायै नमः हृदि। आसनोपवेशने विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे।

फिर आसन के ऊपर जल छिड़कता हुआ यह मन्त्र पढ़े—

ॐ पृथ्वि ! त्वया धृता लोका, देवि ! त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि ! पवित्रं कुरु चासनम्॥

८. भूत-शुद्धि

पहले पैर से लेकर जानु तक—पृथिवी - बीज 'लँ', जानु से नाभि तक—वरुण - बीज 'वँ', नाभि से कण्ठ तक—अग्नि-बीज 'रँ', कण्ठ से भ्रू-मध्य तक—वायु-बीज 'यँ' और भ्रू-मध्य से ब्रह्म-रन्ध्र तक—आकाश-बीज 'हँ' का ध्यान करे। इस प्रकार पञ्च महा-भूतों का स्मरण करे।

फिर आराम से बैठे हुए देवता, कला और बीज आदि से युक्त भूत-मय देह में धर्म-मूल से उत्पन्न ज्ञान, ऐश्वर्य आदि छः दलों से युक्त परम वैराग्य-रूपी कर्णिका की अपने हृदय-कमल में भावना करे।

कर्णिका में जलती हुई लौ के समान प्रकाशमान, अनादि, अमल और प्रच्छन्न परम चैतन्य-रूप जीवात्मा का भले प्रकार ध्यान करे।

तब मूलाधार से कुण्डलिनी को उठाकर, सुषुम्णा नाड़ी के मार्ग से मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणि-पूरक, अनाहत तक के चक्रों के वर्णों आदि देवताओं को ग्रसती हुई हृदय-कमल में उसके द्वारा जीवात्मा को कवली-कृत हुआ ध्यान करे।

फिर सुषुम्णा के मार्ग से उसे ब्रह्म-रन्ध्र तक ले जाए। वहाँ सहस्र-दल के मध्य में, कर्णिका में स्थित परमात्म-ज्योति-रूप से वर्णों के अधि - पति देवता - समूह के सहित जीवात्मा को 'हंसः' मन्त्र से संयुक्त करे और अन्त में कुण्डलिनी को अपने स्थान में लाकर तत्त्वों का संहार करे।

पहले पृथिवी का यथार्थ रूप में स्मरण कर—'ॐ ह्लां ब्रह्मणे नमः पृथिव्यधि-पतये, निवृत्ति-कलात्मने हुँ फट् स्वाहा' इस मन्त्र से पृथिवी का कुण्डलिनी द्वारा जल-तत्त्व में लय करे।

फिर जल का—'ॐ ह्लीं विष्णवे नमः जलाधि-पतये, प्रतिष्ठा-कलात्मने हुँ फट् स्वाहा' इस मन्त्र से कुण्डलिनी-द्वारा अग्नि-तत्त्व में लय करे।

तब अग्नि का—'ॐ हुँ रुद्राय नमः तेजोऽधि-पतये, विद्या-कलात्मने हुं फट् स्वाहा' इस मन्त्र से कुण्डलिनी-द्वारा वायु-मण्डल में लय करे।

इसके बाद वायु का–'ॐ ह्लैं ईश्वराय, वाय्वधि-पतये, शान्ति-कलात्मने हुँ फट् स्वाहा' इस मन्त्र से कुण्डलिनी - द्वारा आकाश-मण्डल में लय करे।

तब आकाश का—'ॐ ह्लौं सदा - शिवाय नमः आकाशाधि-पतये, शान्त्यतीत-कलात्मने हुँ फट् स्वाहा' इस मन्त्र से कुण्डलिनी-द्वारा नाद में लय करे।

फिर नाद को विन्दु में, विन्दु-शक्ति को नाद-शक्ति में, नाद-शक्ति को पर-शक्ति में प्रणव से लय करे।

तदनन्तर—'ॐ ह्लां हुँ फट् स्वाहा' इस मन्त्र से उस पर-शक्ति का पूर्वोक्त परमात्मा में पूजन कर 'केवल' शरीर की बाँईं कोख में 'पाप-पुरुष' का ध्यान करे—

वाम-कुक्षि-स्थितं पाप - पुरुषं कज्जल - प्रभम्।
ब्रह्म-हत्या-शिरः-स्कन्धं, स्वर्ण-स्तेय-भुज-द्वयम्॥

सुरा-पान-हृदा-युक्तं, गुरु - तल्प - कटि - द्वयम् ।
तत् - संसर्ग - पद - द्वन्द्वमङ्ग - प्रत्यङ्ग - पातकम् ।।
उप-पातक-रोमाणि, रक्त - श्मश्रु - विलोचनम् ।
खड्ग - चर्म - धरं क्रुद्धं, कुक्षौ पापं विचिन्तये ।।

इस प्रकार 'पाप-पुरुष' का ध्यान कर, वाम नासा - रन्ध्र से वायु-बीज 'यँ' से वायु भरकर, नाभि-स्थान के वायु - मण्डल में संयोजन कर, कृष्ण-वर्ण वायु-बीज 'यँ' को कुम्भक द्वारा घुमाते हुए, उससे निकली हुई प्रचण्ड वायु से उस 'पाप-पुरुष' का अपने देह-अंश में शोषण करे। उस वायु को दाहिनी नासा के मार्ग से बाहर निकाल दे। फिर दाहिनी नासा में 'रँ' बीज से वायु को भरकर, मूलाधार में ले जाकर, वहाँ अपने वह्नि-मण्डल में रक्त-वर्ण 'रँ' बीज को घुमाते हुए, उससे निकली हुई महा-वह्नि से 'पाप-पुरुष' और अपनी देह को जलाकर, भस्म-सहित उस वायु को वाम नासा के मार्ग से बाहर निकाल दे। फिर बाँएँ नासा-मार्ग से 'वँ' बीज से वायु को भरकर उसे ब्रह्म-रन्ध्र में ले जाकर वहाँ चन्द्र-मण्डल में शुक्ल-वर्ण 'वँ' बीज को कुम्भक-द्वारा घुमाते हुए, उससे निकली हुई अमृत-धारा से अपनी देह की भस्म को सिञ्चित कर वायु को दाहिनी नासा से निकाल दे। फिर दाहिनी नासा से 'लं' बीज से वायु को भरकर उससे मूलाधार में स्थित पार्थिव मण्डल में ले जाकर, पीत-वर्ण 'लँ' बीज को कुम्भक-द्वारा घुमाते हुए, उससे उत्पन्न हुए तेज से अमृत का प्लावन करे। भस्म को दूर कर उस वायु को बाँईं नासा से निकाल दे। फिर बाँईं नासा से माया-बीज 'ह्रीं' से वायु को भरकर मूलाधार के

विन्दु में माया-बीज को स्फुरित कर, नकुलार्क वर्ण कुम्भक-द्वारा घुमाते हुए, उससे हाथ, पैर आदि अङ्गों समेत अपनी देह को निष्पन्न भावित करे और उस वायु को दाहिनी नासा से बाहर निकाल दे।

इस प्रकार स्थूल शरीर को निष्पन्न कर, उसमें सहस्रारस्थ परमात्मा के पास से सकलांस-सृक्षा-विजृम्भित पर-ब्रह्म-स्वरूपिणी परा-शक्ति को 'ॐ ह्रीं नमः' मन्त्र से अपने स्थान में लावे। तब नाद - शक्ति और विन्दु - शक्ति को क्रम - पूर्वक प्रणव से रचकर विन्दु-शक्ति के पास से कुण्डलिनी को प्रणव से रचकर निकाले। कुण्डलिनी से आकाश को, आकाश से वायु को, वायु से अग्नि को, अग्नि से जल को और जल से पृथिवी को—इन भूतों को अपने-अपने स्थान में स्थापित करे।

नाद-शक्ति, विन्दु-शक्ति और प्रणव के द्वारा अपने देह की व्याप्ति की भावना करे। फिर परमात्मा के पास से कुण्डलिनी में जीवात्मा को लय कर वर्ण-वर्णाधि-देवता सहित आज्ञादि चक्रों में उन-उन वर्ण-वर्णादि-देवताओं को स्थापित करे। हृदय-कमल में लाकर हृदय-कमल में जीवात्मा को 'सोऽहं' मन्त्र से स्थापित करे और कुण्डलिनी को, सुषुम्णा-मार्ग से मणि-पूरकादि चक्रों में, उन-उन वर्ण-वर्णादि देवताओं को स्थापित करते हुए मूलाधार में ले जाए। तब अपने शरीर को सब पापों से मुक्त, तेजो - रूप और देवताऽऽराधन के योग्य समझे।*

---

* चन्द्रशेखराचार्य के अनुसार 'ॐ ह्रौं' इस 'ज्योति-बीज' का अष्टोत्तर-शत जप करने से भी 'भूत-शुद्धि' होती है।

९. कवच-पाठ

'भूत-शुद्धि' करने के बाद आचमन कर कवच का पाठ करे। पहले निम्न मन्त्रों से आचमन करे—

१ ॐ ह्रीं आत्म-तत्त्वं शोधयामि,

२ ॐ मं शिव-तत्त्वं शोधयामि,

३ ॐ नं विद्या-तत्त्वं शोधयामि,

४ ॐ ह्रीं सर्व-तत्त्वं शोधयामि।

तदनन्तर मूल-मन्त्र से शिखा-बन्धन और प्राणायाम करे तथा तीन बार अर्घ्य प्रदान करे।

इसके बाद कवच का पाठ करे।

'कवच-पाठ' करके 'मातृका-न्यास' करे। यथा—]

१०. मातृका-न्यास

१—अन्तर्मातृका-न्यास

विनियोग—ॐ अस्य अन्तर्मातृका - न्यास - मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीमातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, अमुक-देवी-अङ्गत्वेन मम शरीर-शुद्ध्यर्थं अन्तर्मातृका-न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—ॐ अं ब्रह्मणे ऋषये नमः आं शिरसि। ॐ इं गायत्री-छन्दसे नमः ईं मुखे। ॐ उं सरस्वती-देवतायै नमः ऊं हृदये। ॐ एं हल्भ्यो वीजेभ्यो नमः ऐं गुह्ये। ॐ ओं स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः औं पादयोः। ॐ अं अव्यक्त - कीलकाय नमः नाभौ। अमुक देवी-अङ्गत्वेन मम शरीर - शुद्ध्यर्थं अन्तर्मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

प्राणायाम—'अं आं···अं अः' इन स्वरों से पूरक, 'कं खं··· भं मं' इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं···हं ळं क्षं' इन वर्णों से रेचक करे।

कर-न्यास—ॐ अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां नमः। ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां नमः। ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं अनामिकाभ्यां नमः। ॐ ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां नमः। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतल-करपृष्ठाभ्यां नमः।

षडङ्ग-न्यास—ॐ अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। ॐ इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। ॐ उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। ॐ एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ॐ ओं पं फं बं भं मं औं नेत्र-त्रयाय वौषट्। ॐ अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यान ॥

आधारे लिङ्ग-नाभौ प्रकटित-हृदये तालु-मूले ललाटे।
द्वे पत्रे षोडशारे द्वि-दश-दश-दले द्वादशार्द्धे चतुष्के॥
वासान्ते वाल-मध्ये डफकठ-सहिते कण्ठ-देशे स्वराणाम्।
हक्षौ तत्त्वार्थ-चिन्त्यं सकल-दल-गतं वर्ण-रूपं नमामि॥
शरत्-पूर्णेन्दु-शुभ्रां सकल-लिपि-मयीं लोल-रक्त-त्रिनेत्राम्।
शुक्लालङ्कार-भासां शशि-मुकुट-जटा-भार-हार-प्रदीप्ताम्॥
विद्या-स्रक्-पूर्ण-कुम्भान् वरमपि दधतीं शुद्ध-पट्टाभिराढ्याम्।
वाग्-देवीं पद्म-पत्रां कुच-भर-नमितां चिन्तयेत् साधकेन्द्रः॥

॥ न्यास-विधि ॥

कण्ठे धूम्र-वर्णे षोडश-दले विशुद्धे—ॐ अं नमः। ॐ आं नमः। ॐ इं नमः। ॐ ईं नमः। ॐ उं नमः। ॐ ऊं नमः।

ॐ ऋं नमः। ॐ ॠं नमः। ॐ लृं नमः। ॐ लॄं नमः। ॐ एं नमः। ॐ ऐं नमः। ॐ ओं नमः। ॐ औं नमः। ॐ अं नमः। ॐ अः नमः।

हृदये रक्त - वर्णे द्वादश - दले अनाहते— ॐ कं नमः। ॐ खं नमः। ॐ गं नमः। ॐ घं नमः। ॐ ङं नमः। ॐ चं नमः। ॐ छं नमः। ॐ जं नमः। ॐ झं नमः। ॐ ञं नमः। ॐ टं नमः। ॐ ठं नमः।

नाभौ मेघ-वर्णे दश-दले मणिपूरे--ॐ डं नमः। ॐ ढं नमः। ॐ णं नमः। ॐ तं नमः। ॐ थं नमः। ॐ दं नमः। ॐ धं नमः। नं नमः। ॐ पं नमः। ॐ फं नमः।

लिङ्ग-मूले विद्युद्-वर्णे षट् - दले स्वाधिष्ठाने—ॐ बं नमः। ॐ भं नमः। ॐ मं नमः। ॐ यं नमः। ॐ रं नमः। ॐ लं नमः।

सुवर्ण - वर्णे चतुर्दले मूलाधारे—ॐ वं नमः। ॐ शं नमः। ॐ षं नमः। ॐ सं नमः।

भ्रू - मध्ये श्वेत - वर्णे द्वि - दले आज्ञा - चक्रे—ॐ हं नमः। ॐ क्षं नमः।

२—बहिर्मातृका-न्यास

विनियोग—ॐ अस्य सृष्टि-मातृका-मन्त्रस्य श्रीब्रह्मा ऋषिः, गायत्री छन्दः, श्रीसृष्टि-मातृका सरस्वती देवता, हलो बीजानि, स्वराः शक्तयः, अव्यक्तं कीलकं, अमुक देवी - अङ्गत्वेन सर्व-पाप-क्षयार्थे जपे सृष्टि-मातृका-न्यासे विनियोगः।

ऋष्यादि-न्यास—श्रीब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि। गायत्री-छन्दसे नमः मुखे। श्रीसृष्टि-मातृका-सरस्वती-देवतायै नमः हृदि।

हलो बीजाय नमः गुह्ये। स्वराः शक्तये नमः पादयोः। अव्यक्त-कीलकाय नमः नाभौ। अमुक देवी-अङ्गत्वेन सर्व - पाप - क्षयार्थे सृष्टि-मातृका-न्यासे विनियोगाय नमः अञ्जलौ।

प्राणायाम—'अं आं···अं अः', इन स्वरों से पूरक, 'कं खं... भं मं', इन व्यञ्जनों से कुम्भक और 'यं···हं ळं क्षं', इन वर्णों से रेचक प्राणायाम करे।

कर-न्यास—अं कं खं गं घं ङं आं अंगुष्ठाभ्यां नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं तर्जनीभ्यां स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं मध्यमाभ्यां वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं अनामाभ्यां हुं। ओं पं फं बं भं मं औं कनिष्ठाभ्यां वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः करतल-करपृष्ठाभ्यां फट्।

अङ्ग-न्यास–अं कं खं गं घं ङं आं हृदयाय नमः। इं चं छं जं झं ञं ईं शिरसे स्वाहा। उं टं ठं डं ढं णं ऊं शिखायै वषट्। एं तं थं दं धं नं ऐं कवचाय हुं। ओं पं फं बं भं मं औं नेत्र - त्रयाय वौषट्। अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः अस्त्राय फट्।

॥ ध्यान ॥

अर्द्धोन्मुक्त-शशाङ्क-कोटि-सदृशीमापीन-तुङ्ग-स्तनीम् ।
चन्द्रार्द्धाङ्कित-शेखरां मधु - दलैरालोल - नेत्र - त्रयाम् ॥
बिभ्राणामनिशं वरं जप - वटीं शूलं कपालं करैः।
आद्यां यौवन - गर्वितां लिपि - तनुं वागीश्वरीमाश्रये ॥

॥ न्यास-विधि ॥

ॐ अं नमः ललाटे—मध्यमा, अनामिका
ॐ आं नमः मुख-वृत्ते—तर्जनी, मध्यमा, अनामिका

ॐ इं नमः दक्ष-नेत्रे—अँगूठा (तर्जनी वा), अनामिका
ॐ ईं नमः वाम-नेत्रे— ,,
ॐ उं नमः दक्ष-कर्णे— ,,
ॐ ऊं नमः वाम-कर्णे— ,,
ॐ ऋं नमः दक्ष-नासायाम्—अँगूठा, कनिष्ठा
ॐ ॠं नमः वाम-नासायाम् ,, | अथवा
ॐ लृं नमः दक्ष-गण्डे—तर्ज०, मध्य०, अना० | केवल
ॐ ॡं नमः वाम-गण्डे— ,, | मध्यमा
ॐ एं नमः ऊर्ध्व-ओष्ठे—मध्यमा
ॐ ऐं नमः अधो-ओष्ठे—मध्यमा
ॐ ओं ऊर्ध्व-दन्त नमः-पंक्तौ—अनामिका
ॐ औं नमः अधो-दन्त-पंक्तौ—अना०
ॐ अं नमः शिरसि—मध्यमा
ॐ अः नमः मुखे—अनामिका (अनामा, मध्यमा वा)
ॐ कं नमः दक्ष-बाहु-मूले—मध्यमा, अनामिका, कनि०
ॐ खं नमः दक्ष-कूर्परे ,,
ॐ गं नमः दक्ष-मणि-बन्धे ,,
ॐ घं नमः दक्ष-कर-तले ,,
ॐ ङं नमः दक्ष-कराग्रे ,,
ॐ चं नमः वाम-बाहु-मूले ,,
ॐ छं नमः वाम-कूर्परे ,,
ॐ जं नमः वाम-मणि-बन्धे ,,
ॐ झं नमः वाम-कर-तले ,,
ॐ ञं नमः वाम-कराग्रे ,,

ॐ टं नमः दक्षोरु-मूले—मध्यमा, अनामिका, कनिष्ठा
ॐ ठं नमः दक्ष-जानुनि ,,
ॐ डं नमः दक्ष-गुल्फे ,,
ॐ ढं नमः दक्ष-पाद-तले ,,
ॐ णं नमः दक्ष-पादाग्रे ,,
ॐ तं नमः वामोरु-मूले ,,
ॐ थं नमः वाम-जानुनि ,,
ॐ दं नमः वाम-गुल्फे ,,
ॐ धं नमः वाम-पाद-तले ,,
ॐ नं नमः वाम-पादाग्रे ,,
ॐ पं नमः दक्ष-पार्श्वे ,,
ॐ फं नमः वाम-पार्श्वे ,,
ॐ बं नमः पृष्ठे ,,
ॐ भं नमः नाभौ—अंगुष्ठ, अनामिका, मध्यमा
ॐ मं नमः जठरे—अंगुष्ठ, तर्जनी, मध्यमा, अना०, कनि०
ॐ यं त्वगात्मने नमः हृदि ,,
ॐ रं असृगात्मने नमः दक्षांशे—मध्यमा, अनामिका
ॐ लं मांसात्मने नमः ककुदि ,,
ॐ वं मेदात्मने नमः वामांशे ,,
ॐ शं अस्थ्यात्मने नमः हृदादि दक्ष-करांगुल्यन्तम् ।
ॐ षं मज्जात्मने नमः हृदादि वाम-करांगुल्यन्तम् ।
ॐ सं शुक्रात्मने नमः नाभ्यादि दक्ष-पादान्तम् ।
ॐ हं जीवात्मने नमः नाभ्यादि वाम-पादान्तम् ।
ॐ ळं परमात्मने नमः हृदादि कुक्षौ ।
ॐ क्षं ज्ञानात्मने नमः हृदादि मुखे ।

११ मूल-मन्त्र का न्यासादि

मातृका - न्यास करके मूल - मन्त्र का विनियोग, ऋष्यादि-न्यास, कर-न्यास, षडङ्ग-न्यास, मन्त्राक्षर-न्यास करे। फिर हाथ जोड़कर इष्ट-देवी का 'ध्यान' करे।

॥ मानसोपचार-पूजन ॥

ध्यान करने के बाद मानसोपचारों से पूजन करे। यथा—

लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि, हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि, यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि, रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि, वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि, सं सोमात्मकं ताम्बूलं समर्पयामि।

॥ मूल-मन्त्र का जप ॥

मानसोपचार-पूजन करके यथा-सुविधा 'मूल-मन्त्र' का कुछ 'जप' करे।

१२. पीठ-पूजन-क्रम

॥ अर्घ्य-पात्र का स्थापन ॥

पहले अपनी बाँईं ओर 'त्रिकोण' बनाकर उसका पूजन करे। यथा—ॐ पृथिव्यै नमः, ॐ कमठाय नमः, ॐ शेषाय नमः।

फिर 'ॐ अग्नि-मण्डलाय दश-कलात्मने 'अमुकी'-देवी-अर्घ्यं-पात्रासनाय नमः'–इस मन्त्र से उक्त 'त्रिकोण' पर 'त्रिपदी' रक्खे और उसका पूजन इस मन्त्र से करे—'ॐ दश-कलात्मने अग्नि-मण्डलाय नमः। ॐ द्वादश-कलात्मने सूर्य-मण्डलाय 'अमुकी' देवी-अर्घ्य - पात्राय नमः' इस मन्त्र से 'त्रिपदी' पर 'पात्र' रख कर उसका पूजन इस मन्त्र से करे—ॐ द्वादश - कलात्मने सूर्य-मण्डलाय नमः।

इसके बाद कलश को पूर्ण करने का मन्त्र यह है—

क्षं ळं हं सं षं शं वं लं रं यं मं भं बं फं पं नं धं दं थं तं णं ढं डं ठं टं ञं झं जं छं चं ङं घं गं खं कं अः अं औं ओं ऐं एं लॄं लृं ॠं ऋं ऊं उं ईं इं आं अं मूलम् ।

जल - पूजन - मन्त्र—ॐ सोम - मण्डलाय षोडश - कलात्मने 'अमुकी'-देवी-अर्घ्यामृताय नमः ।

तत्-पश्चात् अंकुश-मुद्रा से सूर्य-मण्डल से 'ॐ गङ्गे च यमुने॰' मन्त्र द्वारा तीर्थ-शक्तियों का आवाहन कर जल में षडङ्ग-न्यास, अवगुण्ठनी-मुद्रा से अवगुण्ठन, धेनु - मुद्रा से अमृतीकरण, मत्स्य-मुद्रा से आच्छादन कर मूल - मन्त्र का दश बार जप करे। तदनन्तर योनि - मुद्रा दिखाकर नमस्कार करे। फिर उस जल से पूजा-द्रव्यों का तथा अपना सिञ्चन करे।

॥ पीठ-पूजा ॥

फिर अपने इष्ट-देवी का यन्त्र बनाकर उसके मध्य में पीठ-पूजन करे। यथा—

ॐ मं मण्डूकाय नमः, ॐ कां कालाग्नि-रुद्राय नमः, ॐ ह्रीं आधार-शक्तये नमः, ॐ कूं कूर्माय नमः, ॐ धं धरायै नमः, ॐ सुं सुधा-सिन्धवे नमः, ॐ श्वें श्वेत-दीपाय नमः ॐ सुं सुरदाधिपेभ्यो नमः, ॐ मं मणि-हर्म्याय नमः, ॐ हें हेम-पीठाय नमः । अग्न्यादि पीठ-पाद-चतुष्टये—ॐ धं धर्माय नमः, ॐ ज्ञां ज्ञानाय नमः, ॐ वैं वैराग्याय नमः, ॐ ऐं ऐश्वर्याय नमः । पूर्वादि - पीठ - गात्र-चतुष्टये—ॐ अं अधर्माय नमः, ॐ अं अज्ञानाय नमः, ॐ अं अवैराग्याय नमः, ॐ अं अनैश्वर्याय नमः । मध्ये—ॐ अं अनन्ताय नमः, ॐ तं तत्त्व-पद्मासनाय नमः, ॐ विं विकारात्मक-केसरेभ्यो

नमः, ॐ प्रं प्रकृत्यात्मक - पत्रेभ्यो नमः, ॐ पं पञ्चाशत् - वर्ण-कर्णिकायै नमः, ॐ सूं सूर्य-मण्डलाय नमः, ॐ इं इन्दु - मण्डलाय नमः, ॐ पां पावक - मण्डलाय नमः, ॐ सं सत्त्वाय नमः, ॐ रं रजसे नमः, ॐ तं तमसे नमः, ॐ आं आत्मने नमः, ॐ अं अन्त-रात्मने नमः, ॐ पं परमात्मने नमः, ॐ ज्ञां ज्ञानात्मने नमः, ॐ मां माया - तत्त्वाय नमः, ॐ कं कला - तत्त्वाय नमः, ॐ विं विद्या-तत्त्वाय नमः, ॐ पं पर-तत्त्वाय नमः, पूर्वादि-दिक्षु अष्ट-दल-मध्ये-ॐ जयायै नमः, ॐ विजयायै नमः, ॐ अजितायै नमः, ॐ अपरा-जितायै नमः, ॐ नित्यायै नमः, ॐ विलासिन्यै नमः, ॐ दोग्ध्र्यै नमः, ॐ अघोरायै नमः। मध्ये—ॐ मङ्गलायै नमः।

१३. आवाहन और पूजन

॥ आवाहन ॥

'कूर्म - मुद्रा' से पुष्प लेकर देवी के मुख से तेज निकला हुआ भावित कर पुष्प को 'ॐ 'अमुकी' देवी - योग - पीठाय नमः'—इस मन्त्र से 'यन्त्र' पर रक्खे।

क्रम - पूर्वक १ आवाहन, २ स्थापन, ३ सन्निधापन, ४ सन्नि-रोधन और ५ सम्मुखीकरण—इन पाँच मुद्राओं को दिखाने के पश्चात् 'अवगुण्ठन-मुद्रा' से अवगुण्ठन, 'धेनु-मुद्रा' से अमृतीकरण और 'महा - मुद्रा' से परमीकरण कर तथा देवता का षडङ्ग-न्यास करके 'लेलिहान-मुद्रा' से निम्न मन्त्र द्वारा 'प्राण-प्रतिष्ठा' करे—

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोऽहं हंसः 'श्रीअमुकी'-देव्याः प्राणा इह प्राणाः। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोऽहं हंसः 'श्रीअमुकी'-देव्याः जीव इह जीव स्थितः।

ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोऽहं हंसः 'श्रीअमुकी'-देव्याः सर्वेन्द्रियाणि इह स्थितानि। ॐ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं सोऽहं हंसः 'श्रीअमुकी' - देव्याः वाङ् - मनश्चक्षु - श्रोत्र-घ्राण - प्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

सात बार 'मूल-मन्त्र' से तर्पण करे और 'त्रिशूल-मुद्रा' का प्रदर्शन करे।

॥ पूजन ॥

प्रत्येक उपचार-सम्बन्धी मन्त्र पढ़ने के बाद 'मूल-मन्त्र' से उपचार देने सम्बन्धी क्रिया करे—

१ आवाहन—

ॐ हिरण्य-वर्णां हरिणीं, सुवर्ण-रजत-स्रजाम्।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात - वेदो ममावह॥
ॐ सहस्र - शीर्षा पुरुषः सहस्राक्षः सहस्र - पात्।
स-भूमि ँ सर्वतस्पृत्त्वाऽत्यतिष्ठद्-दशांगुलम्॥
ॐ आगच्छेह महा-देवि! सर्व-सम्पत्-प्रदायिनि!
यावद् व्रतं समाप्येत, तावत् त्वं सन्निधा भव॥१

२ आसन—

ॐ ताम् आवह जात - वेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम्।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं, गामश्वं पुरुषानहम्॥
ॐ पुरुष एवेद ँ सर्वं, यद् भूतं यश्च भाव्यम्।
उतामृत्वस्येशानो, यदन्नेनातिरोहति॥
प्रसीद जगतां मातः! संसारार्णव-तारिणि!
मया निवेदितं भक्त्या, आसनं सफलं कुरु॥२

३ पाद्य (चरण-प्रक्षालनार्थ जल में श्यामाक (सँवा), विष्णुक्रान्ता, कमल-पुष्प, दूर्वा आदि मिला ले)—

ॐ अश्व - पूर्णां रथ-मध्यां, हस्ति-नाद-प्रमोदिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये, श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥
ॐ एतावानस्य महिमाऽतो ज्यायाँश्च पूरुषऽस्म् ।
पादोऽस्य विश्वा भूतानि, त्रि-पादस्यामृतं दिवि ॥
गङ्गादि-सर्व-तीर्थेभ्यो, मया प्रार्थनया हृतम् ।
तोयमेतत् सुख-स्पर्शं, पाद्यार्थं प्रति-गृह्यताम् ॥३

४ अर्घ्य—(दूर्वा, तिल, सरसों, यव, पुष्प, अक्षत, चन्दन जल में मिलाकर अर्घ्य प्रदान करे ।)

ॐ कांसोस्मितां हिरण्य-प्रकारामार्द्रां ज्वलन्तीं
तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्म-वर्णां, तामिहोपह्वये श्रियम् ।
ॐ त्रि - पादूर्ध्व उदैत्पुरुषः पादोऽस्येहाभवत् पुनः ॥
ततो विष्वङ् व्यक्रामत् साशानानशनेऽअभि ।
निधीनां सर्व-देवानां, त्वमनर्घ्य-गुणा ह्यसि ।
सिंहोपरि-स्थिते देवि ! गृहाणार्घ्यं नमोऽस्तु ते ॥४

५ आचमन—

ॐ चन्द्रां प्रभासा यशसा ज्वलन्तीम्,
श्रिय लोके देव - जुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मिनीं शरणमहं प्रपद्ये,
अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वा वृणोमि ॥
ॐ ततो विराडजायत विराजोऽधि - पूरुषः ।
स जातोऽत्यरिच्यत पश्चाद् भूमिमथो पुरः ॥

कर्पूरेण सुगन्धेन, सुरभि - स्वादु शीतलम् ।
तोयमाचमनीयार्थं, देवि ! त्वं प्रति-गृह्यताम् ।।५

६ मलापकर्षण स्नान —

ॐ आदित्य - वर्णे तपसोऽधि - जातो,
वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्त फलानि तपसा नुदन्तु,
मायान्तरायाश्च बाह्या अ-लक्ष्मीः ।।
ॐ तस्माद् यज्ञात् सर्व-हुतः, सम्भृतं पृषदाज्यम् ।
पशूंस्तांश्चक्रे वायव्या, नारण्या ग्राम्याश्च ये ।।
मन्दाकिन्याः समानीतैः, हेमाम्भोरुह-वासितम् ।
स्नानं कुरुष्व देवेशि ! सलिलैश्च सुगन्धिभिः ।।६

७ मधुपर्क—

ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः ।
माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः ।।
दधि-मधु-घृत-समायुक्त-पात्र-युग्म-समन्वितम् ।
मधुपर्कं गृहाण त्वं, शुभदा भव शोभने ! ।।७

८ आचमन—

ॐ उच्छिष्टोऽप्यशुचिर्वापि, यस्य स्मरण - मात्रतः ।
शुद्धिमाप्नोति तस्यैते, पुनराचमनीयकम् ।।
स्नान, वस्त्र, उपवीत के अन्त में आचमीय मन्त्र पढ़े ।

९ सुगन्धित तेल (दूर्वा-युक्त)—

ॐ काण्डात् काण्डात् प्ररोहन्ती, पुरुषः परुस्परि ।
एवानो दूर्वे प्रतनु, सहस्रेण शतेन च ।।

ॐ स्नेहं गृहाण स्नेहेन, लोकेश्वरि महानऽघे !
सर्व - लोकेषु शुद्धात्मन्, ददामि स्नेहमुत्तमम् ॥

१० पञ्चामृत-स्नान —

॥ १ दुग्ध-स्नान ॥

ॐ पयः पृथिव्यां पय ओषधीषु
पयो दिव्यन्तरिक्षे पयोधाः ।
पयस्वतीः प्रदिशः सन्तु मह्यम् ।
कामधेनु-समुद्भूतं, सर्वेषां जीवनं परम् ।
पावनं यज्ञ-हेतुश्च, पयः स्नानार्थमर्पितम् ॥

॥ २ दधि-स्नान ॥

ॐ दधि - क्राव्णो अकारिषं जिष्णोरश्वस्य वाजिनः ।
सुरभिनो मुखाकरत्-प्रण आयू ꣳषि तारिषत् ॥
पयसस्तु समुद्भूतं, मधुराम्लं शशि - प्रभम् ।
दध्यानीतं मया देवि ! स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम् ॥

॥ ३ घृत-स्नान ॥

ॐ घृतं मिमिक्षे घृतमस्य योनि —
घृते श्रितो घृतं वस्वधाम ।
अनुष्वधमावह मादयस्व स्वाहा,
कृतं वृषभ वक्षि हव्यम् ॥

ॐ नवनीत - समुत्पन्नं, सर्व - सन्तोष - कारकम्,
घृतं तुभ्यं प्रदास्यामि, स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम् ।

॥ ४ मधु-स्नान ॥

ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत् पार्थिव ँ रजः।
मधु - द्यौरस्तु नः पिता, तरु-पुष्प-समुद्भूतं
सु-स्वादु-मधुरं मधु ॥
तेजःपुष्टि-करं दिव्यं स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम्।

॥ ५ शर्करा-स्नान ॥

ॐ अपा ँ रसमुद्-वयसं, सूर्ये सन्तः समाहितम्।
अपां रसस्य यो रसस्तं वो गृह्णामि ॥
उत्तममुपयाम-गृहीतोसीन्द्राय त्वा जुष्टे गृह्णामि।
एष ते योनिरिन्द्राय त्वः जुष्टतमम् ॥
ॐ इक्षु-सार-समुद्भूता, शर्करा पुष्टि - कारिका।
मलापहारिका दिव्या, स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम् ॥

॥ पञ्चामृत (उक्त पाँचों द्रव्यों का मिश्रण) स्नान ॥

ॐ पञ्च - नद्यः सरस्वतीमपि यन्ति स-स्रोतसः।
सरस्वती तु पञ्चधा, सो देशे भवत् सरित् ॥
ॐ पयोदधि घृतं चैव, मधु च शर्करा - युतम्।
पञ्चामृतं मया नीतं, स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम् ॥❀

॥ चन्दनोदक-स्नान ॥

ॐ गन्धद्वारां दुराधर्षां, नित्य - पुष्टां करीषिणीम्।
ईश्वरीं सर्व - भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥

❀ स्नान के उक्त प्रत्येक उपचार के अन्त में शुद्धोदक - स्नान करावे तथा आचमनीय प्रदान करे। मन्त्र पहले कहा है।

ॐ मलयाचल - सम्भूतं, चन्दनागरु - सम्भवम् ।
चन्दनं देव - देवेशि ! स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम् ।।

।। उद्-वर्तन-स्नान ।।

ॐ अꣳशुना ते अꣳशुऽपृच्यतां परुषापरुः ।
गन्धस्ते सोममवतु, मदाय रसो अच्युतः ।।
ॐ नाना - सुगन्धि-द्रव्यं च, चन्दनं रजनी-युतम् ।
उद्-वर्तनं मया दत्तं, स्नानार्थं प्रति-गृह्यताम् ।।

११ शुद्ध-स्नान—

ॐ शुद्ध - बालः सर्व-शुद्ध-वालोमणि-वालस्त आश्विनाः ।
श्येतः श्येताक्षोऽरुणस्ते रुद्राय पशुपतये ।।
कर्णायामा अवलिप्ता रौद्रा नभो - रूपाः पार्जन्याः ।

शुद्ध जल के स्नान तथा आचमनीय के अनन्तर श्री - सूक्त के १६ मन्त्रों से शङ्ख से महाऽभिषेक करे। तदनन्तर दो वस्त्र धारण करावे।

ॐ उपैतु मां देव - सखः, कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूताः सुराष्ट्रेऽस्मिन्, कीर्तिं वृद्धिं ददातु मे ।।
ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् ।
तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देवाः ।।
ॐ शङ्खस्थमुदकं पुण्यं, सुगन्धं सु-मनोहरम् ।
निवेदितं मया भक्त्या, महा-देवि ! प्रगृह्यताम् ।।

इन मन्त्रों से अभिषेक तथा 'उपैतु मां' से वस्त्र धारण करावे। फिर निम्न वैदिक मन्त्र पढ़े—

तस्माद् यज्ञात् सर्व-हुतः, ऋचः सामानि जज्ञिरे ।
छन्दांसि जज्ञिरे तस्माद्, यजुस्तस्मादजायत ।।

पट्ट - कूल - युगं देवि ! कञ्चुकेन समन्वितम् ।
परिधेहि कृपां कृत्वा, मातः 'अमुकी'-देवि ! ॥

१२ आचमनं यज्ञोपवीतम्—

ॐ क्षुत् पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च, सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥
ॐ तस्मादश्वा अजायन्त, ये के चोभयादतः ।
गावो ह जज्ञिरे तस्मात् तस्माज्जाता अजावयः ॥
ॐ स्वर्ण - सूत्र - मयं दिव्यं, ब्रह्मणा निर्मितं पुरा ।
उपवीतं मया दत्तं, गृहाण 'अमुकी'-देवि ! ॥

१३ आचमन तथा चन्दन—

ॐ गन्ध - द्वारां दुराधर्षां, नित्य-पुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्व - भूतानां, तामिहोपह्वये श्रियम् ॥
ॐ तं यज्ञं बर्हिषि प्रौक्षन्, पुरुषं जातमग्रतः ।
तेन देवा अयजन्त, साध्या ऋषयश्च ये ॥
ॐ श्री-खण्डं चन्दनं दिव्यं, गन्धाढ्यं सु-मनोहरम् ।
विलेपनं च देवेशि ! चन्दनं प्रति - गृह्यताम् ॥

१४ सौभाग्य-सूत्र—

ॐ सौभाग्य - सूत्रं वरंदे, सुवर्ण-मणि-संयुतम् ।
कण्ठे बध्नामि देवेशि ! सौभाग्यं देहि मे सदा ॥

१५ अक्षत—

ॐ अक्षन्नमीमदन्त ह्यव प्रिया अधूषत ।
अस्तोषत स्वभानवो विप्रा नविष्ठयामती योजान्विन्द्र ते हरी ॥
ॐ अक्षतान् निर्मलान् शुद्धान्, मुक्ता - फल - समन्वितान् ।
गृहाणेमान् महा - देवि ! देहि मे निर्मलां धियम् ॥

१६ हरिद्रा—

हरिद्रा - रञ्जिते देवि ! सुख-सौभाग्य-दायिनि !
तस्मात् त्वां पूजयाम्यत्र, दुःख-शान्ति प्रयच्छ मे ॥

१७ कुंकुम—

कुंकुमं कान्तिदं दिव्यं, कामिनी-काम-सम्भवम् ।
कुंकुमेनार्चिते देवि ! प्रसीद 'अमुकी'-देवि ! ॥

१८ सिन्दूर—

सिन्दूरमरुणाभासं, जपा - कुसुम - सन्निभम् ।
पूजिताऽसि मया देवि ! प्रसीद 'अमुकी'-देवि ! ॥

१९ कज्जल—

चक्षुर्भ्यां कज्जलं रम्यं, सुभगे शान्ति - कारके !
कर्पूर - ज्योतिरुत्पन्नं, गृहाण 'अमुकी'-देवि ! ॥

२० बिल्व-पत्र—

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टीं, सुवर्णां हेम - मालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात - वेदो म आवह ॥
ॐ नमो बिल्मिने च कवचिने च नमो वर्मिणे च
व्वरूथिने च नमः ।
श्रुताय च श्रुत-सेनाय च नमो दुन्दुभ्याय चाहनन्याय
च नमः ॥
अमृतोद्भवः श्रीवृक्षो, महा - देवी - प्रियः सदा ।
बिल्व - पत्रं प्रयच्छामि, पवित्रं ते सुरेश्वरि ! ॥

२१ पल्लव—

ॐ तां म आवह जात - वेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं गावो दास्योऽश्वान् विन्देयं पुरुषानहम् ॥

ॐ अश्वत्थेवो निषदनं, पर्णे वोव्वसतिष्कृता ।
गोभाज इत् किलासथं यत् सनवथ पुरुषम् ।।
गृह-द्वारे चोग्रमपि, दुष्टासुर - निषूदनि !
पूजां करोमि देवेशि ! पल्लवैर्नन्दनोद्भवैः ।।

२२ फल-माला—

यहाँ पहले इष्ट-देवी के 'गायत्री मन्त्र' का उच्चारण करे । तव कहे –

ॐ याः फलिनीर्या अफला अपुष्पा याश्च पुष्पिणीः ।
वृहस्पति - प्रसूतास्तानो मुञ्चत्व ꣳ हसः ।।
ॐ पूजा - काले समुद्-भूतां, निशुम्भे मर्दिते त्वया ।
फल - मालां प्रयच्छामि, गृहाण 'अमुकी' - देवि ! ।।

२३ रत्न-माला—

ॐ परि - वाज - पतिः कविरग्निर्हव्यान्यक्रमीत् ।
दधद् रत्नानि दाशुषे ।।
ॐ कर्दमेन प्रजा - भूता मयि सम्भ्रम - कर्दम ।
श्रियं वासय मे देवि ! मातर पद्म-मालिनीम् ।।
ॐ मुक्ता-फल-युतां मालां, रत्न-वैडूर्य-सुप्रभाम् ।
माणिक्य-स्वर्ण-ग्रथितां, गृह्यतां वरदे ! नमः ।।

२४ पुष्प-माला—

ॐ आपः स्रजन्तु स्निग्धानि, चिक्लीत वस मे गृहे ।
निच-देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ।।
ॐ श्रीश्च ते लक्ष्मीश्च पत्न्यावहोरात्रे पार्श्वे
नक्षत्राणि रूपमश्विनो व्यात्तम् ।
इष्णन्निषाणसुम्म इषाण सर्व - लोकम्म इषाण ।।

ॐ पद्म - शङ्खज - पुष्पादि - शत - पत्रैर्विचित्रताम् ।
पुष्प-मालां प्रयच्छामि, ते 'श्रीअमुकी-देवि !' शिवे ॥

२५ पुष्प—

ॐ मनसः क ममाकूतिं वाचः सत्यमशीय ।
पशूनां रूपमन्नस्य, मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥
ॐ यत् पुरुषं व्यदधुः कतिधा व्यकल्पयन् ।
मुखं किमस्यासीत् किं बाहू किमूरू पादा उच्येते ॥
ॐ पुष्पैर्नाना - विधैर्दिव्यैः, कुमुदैरथ चम्पकैः ।
पूजार्थं नीयते तुभ्यं, पुष्पाणि प्रति-गृह्यताम् ॥
मन्दार - पारिजातादि - पाटल - केतकानि च ।
जाती - चम्पक - पुष्पाणि गृहाणेमानि शोभने ! ॥

२६ अलङ्कार—

ॐ हार - कङ्कण - केयूर - मेखला - कुण्डलादिभिः ।
रत्नाढच - कुण्डलोपेतं, भूषणं प्रति - गृह्यताम् ॥

२७ सुगन्धित इत्र—

ॐ अहिरिव भोगैऽपर्य्येनिबाहुम् ।
जाया हेतिं परि - बाधमानः ॥
हस्तघ्नो विश्वा वथुनानि विद्वान् ।
पुमान् पुमा ꣳ सम्परिपातु विश्वतः ॥
ॐ चन्दनागरु - कर्पूरं, कुंकुमं रोचनं तथा ।
कस्तूर्यादि-सुगन्धांश्च, सर्वाङ्गेषु विलेपयामि ॥

इसके बाद श्रीभगवती के दक्षिण भाग में उनके 'शिव' का नामोच्चारण कर निम्न मन्त्र से पूजन करे—

ॐ त्र्यम्बकं यजामहे, सुगन्धि पुष्टि - वर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥

इसके पश्चात् पुष्प हाथ में लेकर यह मन्त्र पढ़े—

ॐ सच्चिन्मये परे देवि ! परामृत-रस-प्रिये !
अनुज्ञां देहि देवेशि ! परिवारार्चनाय मे ॥

१४. आवरण-पूजन

तब अपनी इष्ट-देवी का आवरण-पूजन करे।

आवरण-पूजन करने के बाद मूल-मन्त्र से तीन पुष्पाञ्जलियाँ अपनी इष्ट - देवी को अर्पण करे। अपनी इष्ट-देवी को मुद्राओं को दिखावे।

इसके बाद—

धूप—ॐ यः शुचिः प्रयतो भूत्वा, जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
सूक्तं पञ्च - दशर्चं च, श्रीकामः सततं जपेत् ॥
ॐ ब्राह्मणोऽस्य मुखामासीद्, बाहू राजन्यः कृतः ।
ऊरू तदस्य यद् वैश्यः पद्भ्या ँशूद्रो अजायत ॥
वनस्पति-रसोद्भूतो, गन्धाढ्यो गन्ध उत्तमः ।
आघ्रेयः सर्व - देवानां, धूपोऽयं प्रति-गृह्यताम् ॥

दीपक—ॐ सरसिज - निलये सरोज - हस्ते,
धवल-तरां शुक-गन्ध-माल्य-शोभे !
भगवति हरि - वल्लभे मनोज्ञे,
त्रिभुवन-भूति - करे ! प्रसीद मह्यम् ॥
ॐ चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्योऽजायत् ।
श्रोत्राद् वायुश्च प्राणश्च, मुखादग्निरजायत् ॥

ॐ आज्यं च वर्ति-संयुक्तं, वह्निना योजितं मया ।
दीपं गृहाण देवेशि ! त्रैलोक्य-तिमिरापहम् ॥

नैवेद्य–जल से सिंचन कर, चन्दन-पुष्प चढ़ाकर, धेनु-मुद्रा से अमृतीकरण कर, योनि-मुद्रा दिखाकर घण्टा बजाए—

ॐ नाभ्या आसीदन्तरिक्ष ँ शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत ।
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोत्रात् तथा लोका ँ अकल्पयन् ॥

ग्रास-मुद्रा—१ ॐ प्राणाय स्वाहा, २ ॐ अपानाय स्वाहा, ३ ॐ समानाय स्वाहा, ४ ॐ व्यानाय स्वाहा, ५ ॐ उदानाय स्वाहा ।

ॐ आर्द्रां यः करिणीं यष्टीं, सुवर्णां हेम-मालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जात-वेदो ममावह ॥
अन्नं चतुर्विधं स्वादु-रसैः षड्भिः समन्वितम् ।
नैवेद्यं गृह्यतां देवि ! भक्ति मे ह्यचलां कुरु ॥

आचमन—

ॐ आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं, पिङ्गलां पद्म-मालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं, जातवेदो म आवह ॥
ॐ यत्-पुरुषेण हविषा, देवा यज्ञमतन्वत ।
वसन्तोऽस्यासीदाज्यं, ग्रीष्म इद्ध्मः शरद्धविः ॥
आचम्यतां महा-देवि ! भक्ति मे ह्यचलां कुरु ।
ईप्सितं मे वरं देहि, परत्र च परां गतिम् ॥

गन्ध—ॐ करोद्वर्तनकं देवि ! सुगन्धैः परि-वासितैः ।
ईप्सितं मे परं देहि ! परत्र च परां गतिम् ॥
करोद्वर्तनार्थं गन्धं समर्पयामि ।

जल—ॐ गन्ध-तोय-समानीतं, सुवर्ण-कलशे स्थितम् ।
हस्त-प्रक्षालनार्थाय, पानीयं ते निवेदये ॥

ताम्बूल—ॐ तां म आवह जातवेदो, लक्ष्मीमनप-गामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतिं, गावो दास्योऽश्वान् विन्देय पुरुषानहम् ॥

ॐ सप्तस्यासन् परिधयः, त्रिः सप्त-समिधः कृताः ।
देवा यद् यज्ञं तन्वाना, अवघ्नन पुरुषं पशुम् ॥
ॐ एला लवङ्ग-कस्तूरी-कर्पूरैः पुष्प - वासिताम् ।
वीटिकां मुख - वासार्थमर्पयामि सुरेश्वरि ! ॥

दक्षिणां—

ॐ हिरण्य - गर्भः समवर्तताग्रे, भूतस्य जातः पतिरेक आसीत् ।
स दाधार पृथिवीं द्यामुतेमां, कस्मै देवाय हविषा विधेम ॥
ॐ पूजा - फल - समृद्ध्यर्थं, तवाग्रे स्वर्णमीश्वरि !
स्थापितं तेन मे प्रीता, पूर्णान् कुरु मनोरथान् ॥

दक्षिणा देने के बाद हाथ जोड़कर अपनी इष्ट - देवी का ध्यान करे।

'ध्यान' करने के बाद 'ॐ देवा आयान्तु यातुधाना अपयान्तु, 'अमुकी'-देवि ! यजनं रक्षस्व'—यह कहकर भूमि पर प्रादेश बनाकर 'प्रणाम' करे।

१५. बलि-प्रदान

इसके बाद पूजा - गृह से बाहर ईशान - कोण में सिन्दूर से त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मक यन्त्र बनाकर—'ॐ बटुक-बलि-पात्रा-धार-मण्डलाय नमः'—इस मन्त्र से गन्ध-पुष्पादि-द्वारा पूजा करे और उसमें बलि-द्रव्य रखकर—'ॐ वं वटुकाय नमः'—इस मन्त्र से गन्ध - पुष्पादि द्वारा पूजन करे तथा अंगुष्ठ एवं अनामिका के योग-द्वारा 'बलि' सर्मपित करता हुआ यह मन्त्र पढ़े—'ॐ एहि एहि देवी-पुत्र, बटुक-नाथ, कपिल-जटा-भार-भास्वर, त्रि - नेत्र,

ज्वाला-मुख ! सर्व - विघ्नान् नाशय - नाशय सर्वोपचार-सहितां बलिं गृह्ण-गृह्ण स्वाहा ।'

१६. आरती

अन्त में हस्त-पाद-प्रक्षालन करके आरती करे।

१७. पुष्पाञ्जलि

'आरती' करने के बाद हाथ में पुष्प लेकर निम्न मन्त्रों को पढ़े--

ॐ यज्ञेन यज्ञमयजन्त देवास्तानि धर्माणि प्रथमान्यासन् । तेह नाकं महिमानः सचन्त यत्र पूर्वे साध्याः सन्ति देव्याः । ॐ राजाधि-राजाय प्रसह्य साहिने । नमो वयं वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् काम - कामाय मह्यं । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय महा - राजाय नमः । ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भौज्यं स्वाराज्यं पारमेष्ठ्यं राज्यं महा-राज्यमाधिपत्यमयं समन्त-पर्यायी स्यात् सार्वभौमः सर्वायुष आन्तादापरार्धात् । पृथिव्यै समुद्र-पर्यन्ताया एक - राडिति तदप्येष श्लोकोऽभि - गीतो मरुतः परि - वेष्टितारो मरुत् तस्यावसन् गृहे । आविक्षितस्य कामप्रे विश्वे - देवाः सभासद इति । ॐ विश्वतश्चक्षुरुत विश्वतो मुखो विश्वतो बाहुरुत विश्वतस्पात् । सम्बाहुभ्यां धमति सम्पतत् त्रैर्द्यावा भूमी जनयन् देव एकः । ॐ कुल-कुमार्यै विद्महे अमुक देव्यै धीमहि तन्नो अमुक देवी प्रचोदयात् । नाना-विधानि पुष्पाणि यथा कालोद्भवानि च । पुष्पाञ्जलिं मया दत्तं गृहाण 'अमुक'-देवि !

१८. प्रदक्षिणा

पुष्पाञ्जलि अर्पण कर योनि - मुद्रा से नमस्कार कर प्रदक्षिणा करे—ॐ सप्तान्यासन् इत्यादि यानि कानि च पापानि, जन्मान्तर-कृतानि च । तानि तानि प्रणश्यन्ति, प्रदक्षिणे पदे पदे ।

इसके अनन्तर सभी आवरण-देवताओं की क्रम से श्रीभगवती के अङ्ग में लय-भावना करे और प्रार्थना करे—

ॐ यद् - दत्तं भक्ति - मात्रेण, पत्रं पुष्पं फलं जलम् ।
निवेदितं च नैवेद्यं, तद् गृहाणानुकम्पया ॥
आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।
पूजामर्चां न जानामि, त्वं गतिः परमेश्वरि ! ॥
कर्मणा मनसा वाचा, ततो नान्यद् गतिर्मम ।
अन्तश्चारेण भूतानां, द्रष्ट्रा त्वं परमेश्वरि ! ॥
मातर्योनि - सहस्रेषु, येषु येषु व्रजाम्यहम् ।
तेषु तेष्वचला भक्तिरस्तु मे सर्वदा शिवे ! ॥

१९. क्षमापन-स्तोत्र-पाठ

उक्त प्रार्थना कर अर्घ्य-पात्र उठाकर निम्न-लिखित 'क्षमापन स्तोत्र' पढ़े ।

आवाहनं न जानामि, न जानामि विसर्जनम् ।
पूजां चैव न जानामि, क्षम्यतां परमेश्वरि ! ॥

हे परमेश्वरि ! मैं आवाहन की विधि नहीं जानता, न विसर्जन करना जानता हूँ और पूजा-विधि भी नहीं जानता । मुझे क्षमा करिए ।

मन्त्र-हीनं, क्रिया-हीनं, भक्ति-हीनं सुरेश्वरि !
यत्-पूजितं मया देवि ! परिपूर्णं तदस्तु मे ।।

हे सुरेश्वरि ! मेरे द्वारा जो पूजन किया गया है, वह मन्त्र-रहित है, क्रिया-रहित और भक्ति से रहित है। हे देवि ! वह आपकी कृपा से पूर्ण हो।

अज्ञानाद् विस्मृतेर्भ्रान्त्या, यन्न्यूनमधिकं कृतम् ।
तत्-सर्वं क्षम्यतां देवि ! प्रसीद परमेश्वरि ! ।।

हे परमेश्वरि ! अज्ञान के कारण, भूल जाने से या भ्रम-वश जो कुछ कम या अधिक मैंने किया है, उस सबको, हे देवि ! क्षमा करो और मुझ पर प्रसन्न होओ।

कामेश्वरि ! जगन्मातः ! सच्चिदानन्द-विग्रहे !
गृहाणार्चामिमां प्रीत्या, प्रसीद परमेश्वरि ! ।।

हे कामेश्वरि ! हे सच्चिदानन्द--मय स्वरूपवाली परमेश्वरि ! इस पूजा को प्रेम से स्वीकार करो और मुझ पर प्रसन्न होओ।

फिर—

ॐ पूर्णमदं पूर्णमिदं, पूर्णात् पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय, पूर्णमेवावशिष्यते ।।

ॐ शान्तिः शान्तिः शान्तिः--यह कहकर श्रीगुरु-देव को प्रणाम करे।

२०. प्रसाद-वितरण

इसके बाद भक्तों को 'प्रसाद'-वितरण करे और इष्ट-देवी-रूप होकर सुख-पूर्वक विहार करे।

●•●

संक्षिप्त नित्य-होम

द्वादश अंगुल चतुरस्र बनाकर उस पर लौकिक अग्नि की स्थापना करे। फिर 'मूल-मन्त्र' से वेदी को देखे और 'फट्' मन्त्र से उसका प्रोक्षण करे। तब 'फट्' मन्त्र से कुश से उसका ताड़न कर 'हुं' मन्त्र से उस पर जल छिड़के।

इसके बाद––'ॐ चित्-पिङ्गल ! हन हन, दह दह, पच पच, सर्वाज्ञाज्ञापय स्वाहा' मन्त्र से अग्नि प्रज्वलित कर–'ॐ वैश्वानर, जात-वेद ! इहावह लोहिताक्ष ! सर्व-कर्माणि साधय स्वाहा' मन्त्र से अग्नि का आवाहन तथा पूजन करे।

जठरानल और परमात्मा का ऐक्य-चिन्तन कर अपने हृदय में देवी का 'ध्यान' करे। अग्नि का आवाहन कर, देवता और अग्नि को एक चिन्तन करता हुआ गन्धादि से पूजन करे। फिर 'मन्त्र-राज' से २५ आहुतियाँ प्रदान करे। तदनन्तर षडङ्ग तथा आवरण-देवताओं को एक-एक आहुति प्रदान करे।

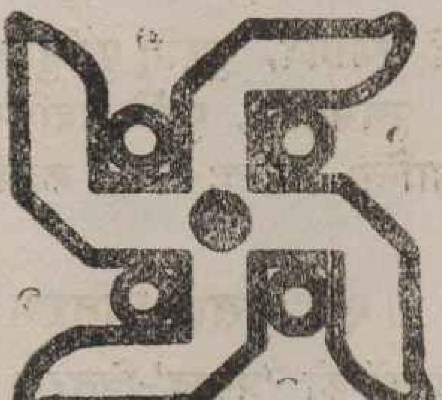

साधनोपयोगी साहित्य

हेतु

साधन-माला

पढ़ें।

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें-

मन्त्र, तन्त्र, योग

शक्ति उपासना

प्रकाश डालने वाली

एकमात्र मासिक पत्रिका

चण्डी कार्यालय

चण्डी

अलोपीबाग, इलाहाबाद-२११००६